त्रिएकत्व को समझना

Understanding the Trinity: So We Can Know God Better and Love Him More

David Beaty
© 2016 River Oaks Community Church 1855 Lewisville-Clemmons Road
Clemmons, NC 27012 riveroakschurch.org

त्रिएकत्व को समझना

क्या आपने कभी किसी बच्चे को त्रिएकत्व को समझाने का प्रयास किया है? (बच्चे अत्याधिक कठिन धर्म वैज्ञानिक प्रश्नों को पूछने के लिए प्रवृत्त होते हैं!) हो सकता है कि एक परमेश्वर को तीन व्यक्तियों में चित्रित करने की मानवीय अनुरूपता पाने में आपको संघर्ष करना पड़ा हो। हो सकता है दूसरों के समान यह सार निकाला हो कि पृथ्वी पर का ऐसा कोई उदाहरण पर्याप्त रूप से परमेश्वर के इस भेद को स्पष्ट या प्रमाणित नहीं कर सकता कि एक में तीन हैं।

अथवा आपकी चुनौती किसी और धर्म के व्यक्ति को परमेश्वर के बारे में अपना दृष्टिकोण समझाने की रही हो। हो सकता है कि एक यहोवा विटनेस ने आपको यह बताया हो कि बाइबल में "त्रिएकता" शब्द नहीं पाया जाता है। हो सकता है कि एक मुस्लिम मित्र ने आपसे कहा होगा, "मैं आपके धर्म का अनुसरण कभी नहीं कर सकता क्योंकि आप मसीही तीन ईश्वरों की आराधना करते हो!"

जब बाइबल का एक धर्म सिद्धांत बहुतों के लिए अस्पष्ट हो, तब क्या यह उतना महत्वपूर्ण हो सकता है? क्यों एक शिक्षा जो परमेश्वर के एक सही ज्ञान के लिए आवश्यक है, मनुष्य की सीमाओं को खींचती है? यदि आप पहले से ही एक मसीही है, तब क्या त्रिएकत्व के धर्म सिद्धांत को समझना जरूरी है?

त्रिएकत्व के बारे में बाइबल समस्त शिक्षा की एक अच्छी समझ परमेश्वर के साथ एक बढ़ रहे संबंध के लिए अत्यंत आवश्यक है। पवित्र शास्त्र हमारे त्रिएक परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है उसे सीख लेना या आत्मसात करना हमें हमारे उद्धार के लिए कहीं बढ़कर कृतज्ञ बनाता और हमारे आत्मिक विकास में गहन आनंद को भर देता है। पिता पुत्र और पवित्र आत्मा की भूमिकाओं को समझना परमेश्वर से और अधिक प्रेम करने, और उसकी सेवा और अधिक विश्वासयोग्यता से करने में हमारी सहायता करता है। त्रिएकत्व के रूप में परमेश्वर का परिज्ञान में बढ़ते रहना, अब उसके साथ भरपूर संगति में अगुवाई करता और अनंत काल में उसकी उपस्थिति का कहीं बढ़कर पूर्वभास कराता है।

त्रिएकत्व को परिभाषित करना

इसलिए जब मसीही परमेश्वर के त्रिएकत्व के बारे में बताते हैं, तो उनका क्या अर्थ होता है? इसका अर्थ यह हैं कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है, और वह अनंतकाल तक तीन भिन्न व्यक्तित्व में अस्तित्व रखता है- पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा- प्रत्येक अपने आप में पूर्ण परमेश्वर हैं। तीन व्यक्तित्व एक परमेश्वर की समझ संपूर्ण कलीसिया इतिहास में बनी रही है और इसे दो प्रारंभिक मसीही धर्ममतों ने पुष्टि की है (प्रेरितों का धर्ममत और नाईसीन धर्ममत)। परमेश्वर को त्रिएक परमेश्वर के रूप में स्वीकारना संसार के धर्मों के बीच में मसीहियत के लिए अद्वितीय है। कई लेखकों ने लिखा है कि त्रिएकत्व के रूप में परमेश्वर की समझ सत्य होना चाहिए, क्योंकि कभी किसी ने एक ऐसे अत्यंत कठिन धर्मसिद्धांत की खोज नहीं की जिसे आत्मसात करें!

केवल एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

संपूर्ण पवित्र शास्त्र हमें यह सिखाता है कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है। इस्राएलियों को मूसा के द्वारा परमेश्वर का निर्देश दिया गया था: "हे इस्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है" (व्यवस्थाविवरण 6: 4)।

जबकि इस्राएली अन्यजाति लोगो के बीच में रहते थे जो बहुत से देवताओं की पूजा उपासना करते थे, तब यहूदियों को पहचानना था कि केवल एक सृष्टिकर्ता था- एक सच्चा परमेश्वर- केवल उसी की आराधना करनी थी। यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर ने एक सच्चे परमेश्वर की, एकमात्र सृष्टिकर्ता की अपनी अद्वितीयता पर ज़ोर दिया था ।

> मुझसे पहले कोई परमेश्वर नहीं रचा गया और ना ही मेरे बाद कोई होगा। मैं, हाँ, मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ और कोई उद्धारकर्ता नहीं।- यशायाह 43: 10- 11

> और मुझे छोड़ और कोई दूसरा उद्धारकर्ता नहीं; एक धर्मी परमेश्वर और उद्धारकर्ता; मेरे अलावा और कोई नहीं।– यशायाह 45:21

नया नियम में, प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि, जबकि पृथ्वी पर बहुत सारे "तथाकथित ईश्वर" हो सकते हैं; परंतु हमारे लिए....

> ... तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता, जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी में अस्तित्व रखते हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएं हैं, और हम भी उसी के द्वारा हैं। - 1 कुरिन्थियों 8: 5- 6

केवल एक सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने को *एकेश्वरवाद* कहा जाता है। मसीहियत , इस्लाम और यहूदावाद सब एकेश्वरवादात्मक धर्म हैं जिनमें प्रत्येक का विश्वास केवल एक परमेश्वर में होता है।

जब मुस्लिम या यहूदी मित्रों से बात करते हैं, तब यह ज़ोर देना महत्वपूर्ण होता है कि मसीही लोग एकेश्वरवादात्मक हैं। हम तीन ईश्वरों में विश्वास नहीं करते, परंतु एक में। तथापि हम एक सच्चे परमेश्वर के स्वभाव का एकदम भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं।

वह तीन भिन्न व्यक्तियों के रूप में अनंतकाल तक अस्तित्व में है-पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

केवल एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, और वह त्रिएक है। और वह हमेशा से तीन भिन्न व्यक्तियों में रहा है, उनमें से प्रत्येक पूर्ण रूप से परमेश्वर है। इस सत्य को समझने में असफल होना कि परमेश्वर तीन व्यक्तियों के रूप में "अनंतकाल अस्तित्व" में है एक गंभीर गलतफहमी को ले जाता है जो कि अभी तौर - तरीके के रूप में जाना जाता है । प्रारंभिक मसीही इतिहास में, साबेलियुस नामक एक मनुष्य ने प्रस्ताव रखा था कि, जबकि केवल एक परमेश्वर है,उस एक मात्र परमेश्वर ने स्वयं को पुत्र के रूप में प्रकट करना चुना था जब उसने संसार में यीशु के रूप में प्रवेश किया, बाद में, वह पवित्र आत्मा के रूप में आया। प्रारंभिक मसीहियों द्वारा साबेलियुस अभियंजन प्रकारवाद धर्मसिद्धांत का खण्डन करना सरल था क्योंकि पवित्र शास्त्र परमेश्वर को ठीक उसी समय क्रियाशील पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रस्तुत करता है ।

उदाहरण के लिए, यीशु के बपतिस्मा लेने के दौरान त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति क्रियाशील थे (मत्ती 3:16-17) । ठीक इसी तरह से, पतरस के वर्णन में,यीशु की सेवकाई में तीनों व्यक्ति एक साथ कार्य करते हुए दिखाई दिए थे|

> ....कि परमेश्वर ने किस रीति से नासरत के यीशु को पवित्र आत्मा और सामर्थ के साथ अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, चंगा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। - प्रेरितों के काम 10:38

परमेश्वर के अनंत अस्तित्व का एक प्रमाण कि वह एक से अधिक व्यक्ति के रूप में कार्य करता है जो कि उत्पत्ति 1:26 में पाया जाता है, जहां परमेश्वर उत्तम पुरुष बहुवचन में बोलता है: "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।"

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में परमेश्वर अनन्त अस्तित्व के महत्व को स्कोर्ट्समैन द्वारा लिखा गया था जो कि 1150 ईस्वी सन में सेंट विक्टर के रिचर्ड के रूप में जाना जाता था। रिचर्ड ने सिखाया कि समस्त अनन्तकाल में परमेश्वर को तीन व्यक्ति होना चाहिए। अन्यथा, अनंत भूतकाल में और सृष्टि किए जाने के पूर्ववर्तीकाल (पहले से) ऐसा एक भी नहीं होता जो प्रेम करे। और परमेश्वर प्रेम *है* (1 यूहन्ना 4:8)। रिचर्ड ने ज़ोर देकर कहा था कि हमारा त्रिएक परमेश्वर सदा से परिशुद्ध (श्रेष्ठ), प्रेममय संगति के एक रिश्ते में हमेशा से अस्तित्व में रहा है ।[2]

---

[1] कभी – कभी मसीही पानी की 3 दशाओं का प्रयोग करते हैं-- जमा हुआ (बर्फ), द्रव्य या तरल, और भाप – त्रिएकत्व का प्रतिनिधित्व करने के लिए । तथापि, एक ही समय में एक साथ पानी इन सारी दशाओं में नहीं होता, यह उदाहरण अभी व्यंजन अभीव्यंज प्रकार वाद के साथ कहीं अधिक पंक्ति या रेखा में है ।

[2] मिखाएल रीवज़, *डीलाइटिंग इन द ट्रिनिटी* (डावनर्स ग्रोव: इंटरवर्सिटी प्रैस, 2012),31.

अब यहाँ मनुष्य के पुत्र का आश्चर्य है: जिस प्रेममय सम्बन्ध को पुत्र ने हमेशा अपने पिता के साथ आनन्दपूर्वक उठाया अब वह इसे हमारे पास लाया है।

मीकाएल रीव्ज़,

रिजॉयसिंग इन क्राइस्ट, पृ.52

अपने विशुद्ध प्रेम के निमित्त, हमारे त्रिएक परमेश्वर ने सृष्टि करना चुना जिससे कि वह अपने महान प्रेम को हमारे साथ बाँटे।

पिता परमेश्वर है

पिता का परमेश्वर होने के बारे में यहाँ थोड़ा सा विवाद है। दरअसल, बहुत से परिच्छेद जो पिता और पुत्र में भेद को दिखलाते हैं, वे ही पिता को परमेश्वर के रूप में बताते हैं। इसे प्रेरित पौलुस के पत्रियों में अत्यंत स्पष्टता से देखा जा सकता है:

हमारे प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता धन्य हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की सांत्वना का परमेश्वर है। 2 कुरिन्थियों 1:3

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से, तुमको अनुग्रह और शान्ति मिले।– इफिसियों 1:2

जब हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं, तब हम हमेशा अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। कुलिसियों1:3

थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो कि परमेश्वर पिता में और प्रभु यीशु मसीह में है: तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। 1 थिस्सलुनीकियों 1:1

पवित्र शास्त्र में ऐसे बहुत सारे पद व परिच्छेद हैं जो प्रकट करते हैं कि पिता ही परमेश्वर है। त्रिएकत्व से प्रस्थान करना पुत्र और पवित्र आत्मा के ईश्वरतत्व पर अभिमुख होने को केंद्रित करता है।

पुत्र परमेश्वर है

संपूर्ण इतिहास में त्रिएकत्व के चारों ओर जो अधिकतम विवाद रहा है वह यीशु के ईश्वरत्व से संबंधित है। यह मामला सबसे महत्तम चर्च के महासभा में संचालित किया गया - नीसिया की महासभा ईस्वी सन् 325 में। इस मामले को अरियुस नामक एक लोकप्रिय कलीसिया के अगुवे द्वारा उठाया गया था| अरियुस ने सिखाया था कि जबकि मसीह एक उच्चतम उन्नत किया गया प्राणी था, लेकिन वह एक सृजा गया प्राणी (मनुष्य) था और परमेश्वर नहीं था। अरियुस यह कहने के लिए प्रसिद्ध था, "एक समय था जब पुत्र नहीं था।" नीसिया की महासभा तीन सौ विषयों की महासभा थी जिसकी बैठक अरियुस की शिक्षा के प्रत्युत्तर में की गई थी। नॉइसीन क्रीड (धर्मसार) का परिणाम एक विश्वास का कथन था जिसने पुत्र, यीशु मसीह के परमेश्वरत्व को अत्यधिक ज़ोर देकर प्रमाणित किया ।[3] समय के इस बिंदु पर यीशु के परमेश्वरत्व को स्थापित नहीं किया गया था बल्कि महासभा ने निश्चयपूर्वक प्रमाणित किया कि मसीहियों ने क्या विश्वास किया था। धर्मसार (क्रीड) इस बात पर बल देती है कि पुत्र "पिता के साथ एक सत्व (तत्व)" है।[4] जैसा कि यीशु सदा से, पूर्ण परमेश्वर रहा है और है। परमेश्वरत्त्व के समस्त गुण और विशेषताएं जैसी परमेश्वर पुत्र में हैं वैसे ही परमेश्वर पिता में हैं। असंख्य बाइबल संबंधी परिच्छेद यीशु मसीह के परमेश्वरत्व को सिखाते हैं। उनमें से एक उत्तम रीति से जाना जाता है वह है यूहन्ना 1:1 : "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" यूहन्ना 1:14 लिखता है कि "वचन देह बना और हमारे बीच में निवास किया।" यीशु अपने जन्म के समय परमेश्वर नहीं बना - बल्कि, वह "देह" बना, हमारे समान एक भौतिक शरीर लेकर। परमेश्वर का पुत्र हमेशा से पिता के साथ अस्तित्व में था। अपने देह्धारण करने में, वह एक मनुष्य प्राणी बना।

यूहन्ना के संपूर्ण सुसमाचार में, यीशु स्वयं के बारे में दावे करता है जो केवल परमेश्वरत्व का सत्य है। वह दावा करता है "मैं हूँ" (यूहन्ना 6:48, 8:12,10:14, 11:25,14:6,15:1) उसे दिव्य नाम से जोड़ता है जिसके द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को मूसा पर प्रकट किया था (निर्गमन 3:14)। जब यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, इसके पहले कि अब्राहम था, मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58), इस पर यहूदियों ने उसे मार डालने के लिए पत्थर उठाया था, क्योंकि उन्होंने ईश्वरत्व के दावे को निंदा किए जाने के रूप में लिया था।

---

3 परिशिष्ट देखें

4 जेम्स आर व्हाइट, *दि फॉरगॉटन ट्रिनिटी* (ब्लूमिन्टन, एम एन बैथनी हाऊस पब्लिशर्स 1998),185-187.

यीशु के परमेश्वरत्व का सबसे स्पष्ट प्रमाण यह था कि उसने आराधना को स्वीकार किया था। सब भले यहूदी जानते थे कि केवल परमेश्वर की आराधना की जानी चाहिए। जब फरीसियों ने भीड़ को बड़े शब्द से यीशु की स्तुति करते सुना तो उन्होंने कहा, "हे गुरु अपने चेले को डांट।" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ, यदि यह चुप रहें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे" (लूका 19:39-40)। यीशु ने एक ऐसे मनुष्य को चंगा किया जो जन्म से अंधा था, और फिर बाद में उसके विश्वास के बारे में पूछा। उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "प्रभु मैं विश्वास करता हूँ,"और उसने यीशु को दंडवत किया (यूहन्ना 9:38)|

पुनरुत्थित यीशु को देखने और उसके क्रूसीकरण के घावों का अवलोकन करने पर उस शिष्य जिसे "शंकालु थोमा" बुलाते थे, उसने यीशु पर विश्वास किया, और अपने विश्वास को आराधना करने के शब्दों में व्यक्त किया: "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर!" (यूहन्ना 20:28)

पवित्र आत्मा परमेश्वर है

जबकि थोड़े ही पद या परिच्छेद हैं जो बड़ी स्पष्टता से पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को सिखाते हैं, जिस पर भी यह तो स्पष्ट बना रहता है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है। प्रेरितों के कामों की पुस्तक हनन्याह और उसकी पत्नी सफीरा के उस वृतांत को बताती है कि किस प्रकार उन्होंने प्रेरितो को धोखा देने का प्रयत्न किया था। पतरस ने उस धोखे को पहचान लिया और कहा, "हनन्याह, शैतान ने तेरे हृदय में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ भाग रख छोड़े?" पतरस ने जब यह कहा, "तूने मनुष्यों से नहीं परंतु परमेश्वर से झूठ बोला है!", इस प्रकार पतरस ने पवित्र आत्मा *के* परमेश्वरत्व को वर्णित किया। (प्रेरितों 5:3-4)

यह समझाने में कि विश्वासियों की देह परमेश्वर का मंदिर हैं, प्रेरित पौलुस लिखता है, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में निवास करता है?" (1 कुरिन्थियों 3:16)। जब पवित्र आत्मा हम में वास करने लगता है तब परमेश्वर अपने लोगों में निवास करता है।

कुरिन्थियों के बाद के पत्री में, पौलुस लिखता है, "प्रभु तो *पवित्र आत्मा* है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।" हमारी स्वतंत्रता परमेश्वर को जानना और उससे प्रेम करना है "प्रभु के द्वारा जो *पवित्र आत्मा* है।" (2 कुरिन्थियों 3: 17-18) ।

पवित्र शास्त्र के उद्गम के बारे में अपनी शिक्षा देने में प्रेरित पतरस स्पष्ट समझाता है कि स्वयं परमेश्वर ने हमें पवित्रशास्त्र या वचन दिया है जैसा कि परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा

के द्वारा मनुष्य के द्वारा लिखवाया: “क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त (पवित्र) जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे” (2 पतरस 1:21) । लेखकगण जिन्होंने “परमेश्वर की ओर से बोला” वे ऐसे बोल रहे थे कि मानो उनकी अगुआई परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा की गई थी ।

जबकि पवित्र आत्मा की प्राथमिक भूमिका यीशु की महिमा करना है (यूहन्ना 16:14), यीशु मसीह ईश-निंदा पर अपनी शिक्षा में पवित्र आत्मा को बड़ी महिमा देता है। जब फरीसियों ने भयंकर दोष लगाएं कि यीशु तो बालज़बूल (बुरी शक्तियों) की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता है, तब यीशु ने उत्तर दिया कि उसके काम “परमेश्वर के आत्मा” से भरे और सामर्थ से होते थे” । यीशु ने आगे अपने सुननेवालों को चेतावनी दी कि “जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परंतु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा उसका अपराध ना तो इस लोक में और ना परलोक में क्षमा किया जायेगा” (मत्ती 12: 24-31)। यहाँ, यीशु अत्यंत सुंदरता से पवित्र आत्मा को सम्मानित और उन्नत करता है। कोई कैसे पुत्र की निंदा करने से क्षमा किया जा सकता है, परंतु पवित्र आत्मा की निंदा करने से बच नहीं सकता? यदि पवित्र आत्मा परमेश्वर है तो यह केवल एक मामला हो सकता है।

तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर

एक सच्चे परमेश्वर में, जो कि सदा से एक पिता,पुत्र, और पवित्र आत्मा के रूप में अस्तित्व में था और है, वहां एक विशुद्ध एकता, प्रेम, और संगति है। जबकि तीनों व्यक्ति समान रूप से परमेश्वर हैं, वह भिन्न-भिन्न भूमिकाओं से भरे हैं। यह कुछ लोगों को प्रश्न का अवसर देता है कि परमेश्वरत्व में उनकी समानता क्या है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 14:28 में, मसीह अपने शिष्यों को बतलाता है कि वह अब उनसे विदा होने पर है, और उसने उनसे कहा, "तुमने सुना है कि मैंने तुमसे कहा, मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आऊंगा। यदि तुम मुझ से प्रेम रखते तो इस बात से आनंदित होते, क्योंकि मैंने कहा कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझसे बढ़कर (बड़ा) है" (यूहन्ना 14:28)। कुछ लोग इस पद को पुत्र की निम्न दशा के रूप में सोचते हैं। वास्तविकता में, यह भूमिकाओं की भिन्नता को दर्शाता है जो कि पिता और पुत्र के बीच की है। पुत्र , पिता की योजना के प्रति स्वेच्छा पूर्वक स्वयं को समर्पित करता है, यहां तक कि हमारे पापों के दंड का भुगतान करने के लिए एक क्रूस पर मरता है। तौभी, चेलों के साथ ठीक उसी प्रकार के वार्तालाप में, यीशु फिलिप्पुस से कहता है जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:9)। पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा के बीच में समानता होने के बावजूद, उनकी भूमिकाएं अलग अलग हैं।

कार्य करने में अंतर स्वभाव की निम्नता का संकेत नहीं है।

जेम्स आर.व्हाइट

***दि फॉरगाटन ट्रिनिटी*, ए.66**

यूहन्ना 8 में, यीशु उस भेद को प्रकट करता है जो कि पिता और उसके बीच में है, उसने कहा, "यह मेरा पिता है जो मुझे महिमान्वित करता है" (पद 54)। लेकिन इसी परिच्छेद में मसीह स्वयं के परमेश्वर होने का ठोस दावा करता है जब वह कहता है, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ इससे पहले कि अब्राहम था, मैं हूँ" (पद 58)।

त्रिएकत्व के तीन व्यक्तियों के ईश्वरत्व और अलग अलग व्यक्ति होने को यीशु की प्रतिज्ञा में दिखाई दिया जो कि पवित्र आत्मा के संबंध में थी। मसीह ने कहा:

> "मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ बना रहे, अर्थात सत्य का पवित्र आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह ना उसे देखता है, और ना ही उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ वास करता या रहता है, और वह तुम में होगा" (यूहन्ना 14:16-17)।

यीशु त्रिएकत्व की परिशुद्ध एकत्व को दिखाना जारी रखता है, जब उसने कहा, "मैं तुम्हें अनाथ ना छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊँगा" (यूहन्ना 14:18)। पुत्र पिता से विनती करता है कि अपने लोगों को पवित्र आत्मा दे। जब पवित्र आत्मा आता है, तो यीशु आता है। इसी कारण से ठीक स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले, उसने अपने चेलों से कहा, "और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:20)।

त्रिएकत्व के तीन व्यक्तियों का एकत्व (एक में तीन) और अलग अलग होना कठिन है। एक कठिन धर्म सिद्धांत को बनाता है जिसे स्पष्ट करना कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है कि त्रिएकत्व को सही मायने में समझने के लिये एक भौतिक अनुरूपता को पाना कठिन है। ईश्वरत्व और परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों की विभिन्ताओं को समझने के सबसे मददगार स्पष्टीकरणों में से एक यह है जिसे मसीही कलीसिया प्रारंभिक शताब्दियों से उपयोग करती आ रही है। प्रारंभिक मसीहियों ने इस रेखा-लेख का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा में से प्रत्येक परमेश्वर है, परंतु व्यक्तियों के रूप में विभिन्न हैं ।

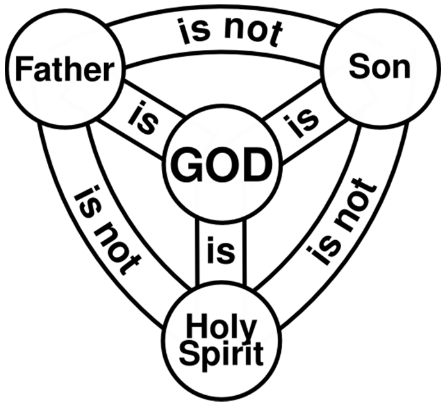

त्रिएक परमेश्वर

त्रिएकत्व के अति सुंदर भेद को स्पष्ट करने के लिए एक अच्छे भौतिक अनुरूपता की कमी के कारण, शायद यह अति उत्तम होगा कि धर्मविज्ञानी जे.आई.पैकर के वाक्यों का उपयोग करें जिसने परमेश्वर को "दि डिवाइन टीम-एक दिव्य दल"[5] के रूप में वर्णित किया है|

---

[5] जे .आई. पैकर, *विवनैस इज़ द ये : लाइव विद क्राइस्ट अवर स्ट्रेंग्थ* (व्हीटन, इस:गुड न्यूज़ पब्लिशर्स, 2013), 56-57.

त्रिएकत्व का धर्मसिद्धांत क्यों बहुत अधिक महत्वपूर्ण है

त्रिएकत्व के धर्मसिद्धांत को लंबे समय से मसीही विश्वास का अनिवार्य विश्वास (यकीन) माना गया, जैसे कि यह प्रेरितों और नाईसीन क्रीड़ों (धर्मसारों) से प्रमाणित है। यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है? धर्मसिद्धान्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक मसीही के रूप में हमारे उद्धार और जीवन के लिए इसके तात्पर्य को जानना काफी महत्वपूर्ण है।

हमारा उद्धार इसलिए पूरा और सुरक्षित है क्योंकि एक ही है जिसने हमारे स्थान पर हमारे लिए दुख उठाया और क्रूस पर मरा। वह परमेश्वर है। यदि यीशु मसीह मात्र एक प्राणी था यहां तक कि एक पाप रहित मनुष्य प्राणी तब तो सभी समय के सभी विशेष वासियों के पापों के लिए क्रूस पर उसकी मृत्यु पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकती थी। यह विवेकपूर्ण प्रतीत हो सकता है कि एक पाप रहित निष्कलंक मनुष्य प्राणी दूसरे पाप पूर्ण मनुष्य प्राणी के लिए मर सकता था। यह तो हमारे लिए एक तर्कसंगत न्याय प्रतीत हो सकता है। परंतु एक व्यक्ति की मृत्यु किस प्रकार भारी भीड़ के कारण अनंत क्षमा और उद्धार का प्रावधान कर सकती थी? यह तभी अर्थपूर्ण बनता है यदि वह व्यक्ति स्वयं ही सृष्टिकर्ता हो।

> **हमारा उद्धार उतना ही अच्छा है जितना कि यह है क्योंकि मसीह वह है जो वह है। उसे परमेश्वर से निम्न स्तर पर बनाने से आप सुसमाचार को ही उत्तम से निम्न बनाते हैं।**

मिकाएल रिव्ज़
***रिजायसिंग इन क्राइस्ट*, पृ. 49**

चूँकि यीशु एक मनुष्य था, वह क्रूस पर हमारे स्थान को ले सकता था। *क्योंकि* वह परमेश्वर था, उसका बलिदान अनंत मूल्य का था। जब हम मान लेते हैं कि मसीह पूर्ण रूप से परमेश्वर था, और यह कि उसने पृथ्वी पर पाप रहित जीवन जिया, और हमारे स्थान पर क्रूस पर दुख सहा, तब हम समझ जाते हैं कि पवित्र शास्त्र यह क्यों कहता है: "इसलिए वे जो मसीह यीशु में हैं, अब उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1)।

जब हमारे लिए क्रूस पर किए गये यीशु के कार्य को विश्वास के द्वारा हम स्वीकार कर लेते हैं तब हम उस न्याय के दंड से जिसके हम योग्य थे, उसके प्रति हमें छुड़ाए जाने की प्रतिज्ञा को प्राप्त कर सकते हैं। हम इस आश्वासन में विश्वास कर सकते हैं कि:

> यह परमेश्वर है जो धर्मी ठहराता है। कौन हम पर दोष लगाएगा? मसीह यीशु वह एक जन है जो मर गया था - इससे भी अधिक, वह मृतकों में से जिलाया गया - वही परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा और जो हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है । रोमियों 8: 33-34.

हमारा उद्धार पूर्ण है, क्योंकि वह जन जो हमारे स्थान में मर गया था वह परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर पुत्र, प्रभु यीशु मसीह।

त्रिएकत्व में विश्वास करना गहन उलझनों का सामना करना भी है कि हम इस पृथ्वी पर यीशु के अनुयायियों के रूप में कैसे जीवन जिएँ। क्योंकि हमारे लिए जो मसीही है पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व का अर्थ है कि परमेश्वर स्वयं हम में निवास करता है। इसका अर्थ है कि हम कभी अकेले नहीं हैं। एक यीशु ने "दूसरे सहायक" और "सत्य का आत्मा" का वर्णन किया जिसे सदैव हमारे साथ रहने के लिए भेजा जाएगा (यूहन्ना 14:15-17)। हम परमेश्वर की उपस्थिति के बिना नहीं रहेंगे क्योंकि हमारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19: 2 कुरिन्थियों 6:16)।

विश्वासी को अपने अंदर परमेश्वर की उपस्थिति का यह आश्वासन और अधिकाई से पवित्र जीवन जीने के लिए कहीं बड़ा प्रेरणास्रोत प्रदान करता है। प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा का एक मंदिर बनने के समय एक बड़ा उत्तरदायित्व आता है। विश्वासियों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के प्रकाश में वह एक आज्ञा जारी करता है: "इसलिए अपनी देह में परमेश्वर की महिमा करो" (1 कुरिन्थियों 6:20)। वह विश्वासियों से विनती करता है, "तुम व्यभिचार से बचे रहो," और "पवित्रता और सम्मान" के साथ अपने अपने शरीर को नियंत्रण में रखें। अन्यथा, "वह मनुष्य को नहीं; परंतु परमेश्वर को" तुच्छ जान रहा है (1 थिस्सलुनीकियों 4 :3-8)।

निवास करनेवाला पवित्र आत्मा एक विश्वासी को मसीह में बने रहने योग्य करता है, और एक मसीही के रूप में एक सामर्थी जीवन के लिए अनिवार्य है।

यीशु ने कहा:

> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे: और तुम यरूशलेम और सारे यहूदिया, और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे। प्रेरितों 1:8

यीशु ने स्पष्ट किया था कि उसमें निरंतर बने रहने या उसके साथ जीने के बिना उसकी सेवा करने में प्रभावशीलता असंभव है। उसने कहा, "जो कोई मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15: 5)। मसीह में बने रहना केवल तभी संभव है जब परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारे अंदर रहता है। तब मसीह का आत्मा हमें समर्थ करता है कि मसीह का कार्य करें।

एक मसीही के जीवन में परमेश्वर की बनी रहने वाली उपस्थिति एक दूसरे असाधारण सत्य को देती है, एक वह जिसे अक्सर नकार दिया जाता है, तब भी उसमें यह संभावना रहती है कि हमारे जीवनों को सामर्थशाली रूप से समृद्ध बनाएं। यह वह सत्य है कि तीन -एक - परमेश्वर में, जो कि हमेशा से सिद्ध प्रेम और सहभागिता के एक संबंध (रिश्ते) में सदा अस्तित्व में रहा है, हमें निमंत्रण देता है कि उसके साथ सहभागिता का आनंद उठाएं। 2 कुरिन्थियों की पत्री के अंत में अति सुंदर आशीर्वाद दिया गया है: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ हमेशा बनी रहे" (2 कुरिन्थियों 13-14)। पवित्र आत्मा के साथ यह सहभागिता, या संगति हमारे लिए परमेश्वर का निमंत्रण है कि उसकी उपस्थिति का आनंद उठाएं। यह पहचानना कि पवित्र आत्मा के द्वारा स्वयं परमेश्वर हममें वास (निवास) करता है, यह हमारे बाइबल अध्ययन, प्रार्थना और आराधना करने में ताज़ी जीवन शक्ति को ला सकता है। परमेश्वर की उपस्थिति को पहचानना हमें कहीं महत्तम शांति और गहरे आनंद में ले जा सकता है, यहां तक कि हमारे जीवनों के अत्यंत कठिन समय में भी।

दुखद रूप से, बहुत सारे मसीही पवित्र आत्मा की उपस्थिति की उपेक्षा कर देते हैं और पवित्रता से दूर, समर्थता से परे और फलदायक जीवन नहीं जीते जिसके लिए परमेश्वर हमें बुलाता है। अपनी *डाइनामिक्स ऑफ स्प्रिचुअल लाइफ* (आत्मिक जीवन का गतिविज्ञान) पुस्तक में डॉक्टर रिचर्ड लवलेक ऐसे उपेक्षित जीवन का वर्णन करते हैं, और एक सुधार या ठीक कर देने की ओर संकेत करते है:

> आज की कलीसिया में विश्वासियों और पवित्र आत्मा के बीच एक विशिष्ट संबंध जो कि पति और पत्नी के बीच एक बुरे विवाह के समान है । वह एक छत के नीचे रहते हैं और पति अपनी पत्नी की सेवाओं, कार्यों का निरंतर उपयोग करता है, परंतु वह अपनी पत्नी से बात या संवाद करने में असफल रहता है, उसकी उपस्थिति को पहचानने और उसके साथ अपने रिश्ते या संबंध का आनंद उठाने में भी।

इस दशा को पलटने के लिए क्या करना चाहिए? हमें पवित्र आत्मा को पहचानने के लिए प्रत्येक दिन के आरंभ में ही अथक प्रयत्न करना चाहिए, कि हम अपनी विवेक शीलता में उसकी उपस्थिति संबंधित प्रकाश में चलें और अपने मनों को खोलें और जब हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के चेहरे को निहारते हैं तब हम उससे अपने सब विचारों और योजनाओं को बाँट या बता सकते हैं। हमें पूरे दिन भर पवित्र आत्मा के साथ संवाद और संगति के एक रिश्ते में बने रहना है, जिसमें हमारे वचन के ज्ञान के द्वारा बीच-बचाव किया जाता है। एक परामर्शदाता के रूप में पवित्र आत्मा के प्रत्येक क्रियाकलाप पर निर्भर बने रहकर जैसे कि पवित्र शास्त्र में बताया गया है। हमें उसे सत्य के प्रबोधक और मसीह की महिमा के रूप में

स्वीकार करना चाहिए। हमें उसे शिक्षक, मार्गदर्शक, शुद्ध पवित्र करने वाले के रूप में देखना चाहिए, जो कि हमें हमारे पुत्रतत्व के संबंध में आश्वासन देनेवाला और परमेश्वर के सामने खड़ा होनेवाला, प्रार्थना करने में मदद करनेवाला, और एक उस रूप में जो हमें दिशा निर्देश देता और हमारी गवाही को सामर्थशील बनाता है।

हमें पवित्रता में   बढ़ने या उन्नति (विकास करने) को विशेष रूप से पहचानना चाहिए जो कि एक अकेले व्यक्ति का एक मामला नहीं है जो रोमियों 6 1:14 के आधार पर दावे करता है। इसमें सम्मिलित है हमारे जीवन के सब क्षेत्रों में व्यक्ति के साथ निर्भर बनी रहनेवाली सहभागिता में बने रहना: पवित्र आत्मा में चलो और तुम शरीर की लालसा पूरी ना करोगे" (गलातियों 5:16)। जब परमेश्वर की उपस्थिति का यह अभ्यास एक लंबे समय तक बनाया रखा जाता है तब पवित्र आत्मा का हमारा अनुभव कम आत्मनिष्ठ बन जाता है और कहीं अधिक स्पष्टता से अभिन्न समझा जाता है इस प्रकार हम धीरे-धीरे शरीर की चाल या गति से आत्मा के संघर्ष में भेद करने योग्य बन जाते हैं।[6]

---

[6] रिचर्ड एफ.लवलेस, *डायनामिक्स ऑफ स्प्रिचुअल लाइफ इन इव्हेंजेलीकल थियोरी ऑफ रिवाइवल* (डवनर्स गोव: इन्टर वर्सिटी प्रैस, 1979), 131

निष्कर्ष

जब हम परमेश्वर के त्रिएक स्वभाव सचित्र रुप से समझने का प्रयास करते हैं तब मानवीय सादृश्य हमें असफल कर सकता है, तब हम पवित्रशास्त्र के अधिकार में आश्वस्त बने रह सकते हैं और त्रिएकत्व के बारे में उसके प्रकाशन पर भी। संपूर्ण इतिहास में मसीहियों ने अति सुंदर, रहस्यमय सत्य को गले से लगाया (अंगीकार किया) कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है जो तीन व्यक्तियों में अनंत काल तक अस्तित्व में रहता है - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - इनमें से प्रत्येक पूर्णरूप से परमेश्वर है। और जबकि त्रिएकत्व के धर्म सिद्धांत को एक सही समझ विवेचनात्मक ढंग से की जाती है जोकि महत्वपूर्ण भी है, तब हम जान पाते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारा संबंध कहीं अधिक होना चाहिए, इसके परे कि उसके स्वभाव के बारे में एकदम सही ज्ञान हो। हम इस असाधारण (विशिष्ट) सच्चाई के आभार यहाँ तक की मूल्यांकन में बढ़ना चाहिए कि स्वयं परमेश्वर इस पृथ्वी पर देहधारण करके एक मनुष्य के रूप में आया कि क्रूस पर हमारे न्याय के दंड को सहे जिससे कि हम उसके अपने लेपालक बच्चों के समान ग्रहण किए जाएं। स्वयं परमेश्वर यीशु के प्रत्येक अनुयायी में पवित्र आत्मा के द्वारा निवास करता है, और हमें कहीं अधिक पवित्र, फलदायक जीवनो को जीने में समर्थ करें, और कि हम संसार में मसीह के गवाह (साक्षी) बनें, जोकि सदा से विशुद्ध प्रेम और सहभागिता में अस्तित्व में रहा है, वह हमें निमंत्रण देता है कि अभी और संपूर्ण अनंत काल में उसकी उपस्थिति का आनंद उठाते रहें ।

परिशिष्ट

दि नाइसीन क्रीड (धर्मसार)

हम एक सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर में विश्वास करते हैं वही स्वर्ग और पृथ्वी और उस सब का जो दिखाई देतीं और अनदेखी है का बनाने वाला है।

हम एक प्रभु, यीशु मसीह, परमेश्वर के एकमात्र पुत्र पर विश्वास करते हैं जो कि पिता परमेश्वर अनंतकाल से परमेश्वर है। उसी के द्वारा सब वस्तुएं बनाई गई थीं।

हमारे लिए और हमारे उद्धार के लिए वह स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर उतरा: पवित्र आत्मा के सामर्थ से वह कुंवारी मरियम से देहधारी हुआ और मनुष्य बना ।

हमारे ही निमित पुन्तियुस पिलातुस की अधीनता में क्रूस पर चढ़ाया गया; उसकी मृत्यु हूई और मर गया और दफनाया गया। तीसरे दिन पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार जीवित हो गया; उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया और वहां पिता के सिंहासन के दाहिनी ओर जा बैठा। वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा सहित इस पृथ्वी पर आएगा, और फिर उसके राज्य का अंत ना होगा।

हम प्रभु पवित्र आत्मा, जीवन देने वाले में विश्वास करते हैं, जो पिता में से निकला (और पुत्र बना)। पिता और पुत्र के साथ उसकी आराधना और महिमा की जाती है। उसने भविष्यद्वाक्ताओं के द्वारा बोला।

हम एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक कलीसिया में विश्वास करते हैं। हम पापों की क्षमा के लिए एक बपतिस्मे को स्वीकार करते हैं। हम मृतकों के पुनरुत्थान की, और उस जीवन की भी जो संसार में आनेवाला है,बाट जोहते हैं।

अमीन!

त्रिएकत्व

एक प्यूरिटन (अतिनैतिक) प्रार्थना

एक में तीन , तीन में एक, मेरे उद्धार का परमेश्वर,

स्वर्गीय पिता, धन्य पुत्र, अनन्त आत्मा,

मैं एक जीवित प्राणी, एक सत्व, तीन विभिन्न व्यक्तियों में एक परमेश्वर

मैं आपकी आराधना करता हूं;

पापियों को आपके ज्ञान और आपके राज्य में लाने के लिए, हे पिता, आपने मुझसे;

प्रेम किया और मुझे छुड़ा लेने के लिए यीशु को भेजा;

हे यीशु आपने मुझसे प्रेम किया और मेरे स्वभाव को धारण किया, मेरे पापों को धोने के लिए अपना रक्त बहाया, मेरी अयोग्यता को ढाँपने के लिए धार्मिकता को गढा;

हे पवित्र आत्मा, आपने मुझसे प्रेम किया और मेरे हृदय में प्रवेश किया, वहां अनंत जीवन को रोपा, यीशु की महिमा को मुझ में प्रकाशित किया ।

तीन व्यक्ति और एक परमेश्वर, आपके अत्यधिक अनर्जित प्रेम, अत्यंत अकम्य, अत्यंत आश्चर्यजनक, खोए हुओं को बचाने के लिए अत्यंत सामर्थी और उन्हें महिमा तक उठाने के लिए मैं आपको धन्य कहता और आपकी स्तुति करता हूं।

हे पिता मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि अनुग्रह की परिपूर्णता में आपने मुझे यीशु को दे दिया, कि मैं उसकी भेड़, रत्न और भाग बनूँ;

हे यीशु, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि अनुग्रह की परिपूर्णता में आपने मेरे उद्धार के रूप में यीशु को दिखाया और मुझ में विश्वास को रोपा, मेरे कठोर हृदय को विनम्र बनाया, सदैव के लिए मुझे उसके साथ एक बनाया।

हे पिता आप सिंहासन पर विराजमान हुए कि मेरी प्रार्थनाएं सुनें, हे यीशु, मेरी विनतियों को सुनने के लिए आपने अपना हाथ बढ़ाया, हे पवित्र आत्मा, आप मेरी दुर्बलताओं में सहायता करने को तैयार रहते हैं, मेरी आवश्यकताओं को दिखाने, वचनों की आपूर्ति करने; मेरे अंदर प्रार्थना करने को तत्पर रहते हैं-

मुझे बल प्रदान करने के लिए कि मैं विनती करने में मूर्छित न होने पाऊं । हे त्रिएक परमेश्वर, जो संपूर्ण सृष्टि को आज्ञा देता है, आपने मुझे आज्ञा दी है कि उन बातों को मांगू जो आपके राज्य और मेरी आत्मा से संबंध रखती हैं। होने दें कि मैं जीवित रहूं और तिगुने नाम में एक बपतिस्मा पाए हुए के रूप में प्रार्थना करूं।

आर्थर बेन्नेट

दि वैली ऑफ विज़न, पृष्ठ 2-3

Sources Consulted:

Bennett, Arthur, ed. *The Valley of Vision: A Collection of Puritan Prayers and Devotions*. Edinburg, UK: Banner of Truth Trust, 1975.

Johnson, Darrell W. *Experiencing the Trinity*. Vancouver, BC: Regent College Publishing, 2002.

Packer, J.I. *Weakness Is the Way: Life with Christ Our Strength.*

Wheaton, IL: Good News Publishers, 2013.

Reeves, Michael. *Delighting in the Trinity*. Downers Grove: InterVarsity Press, 2012.

———. *Rejoicing in Christ*. Downers Grove: InterVarsity Press, 2015.

The Trinity. Torrance, CA: Rose Publishing, Inc., 2005.

Ware, Bruce A. *Father, Son, & Holy Spirit: Relationships, Roles, and Relevance.* Wheaton; Crossway, 2005.

Wells, David F. *What Is the Trinity?* Phillipsburg, NJ: P&R Publishing, 2012.

White, James R. *The Forgotton Trinity.* Bloomington, MN: Bethany House Publishers, 1998.